रॉबर्ट वेन्नॉय , ड्यूटेरोनॉमी, व्याख्यान 14

© 2011 डॉ. रॉबर्ट वेन्नॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्डेब्रांट

प्राचीन इज़राइल में पूजा के केंद्रीकरण के वेलहाउज़ेन के दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया

आइए हम अपनी चर्चा पर वापस आते हैं। हम पूजा के मुद्दों के केंद्रीकरण पर चर्चा कर रहे थे। पिछले सप्ताह हमने पूजा के केंद्रीकरण के स्थान और वेलहाउज़ेन द्वारा इज़राइल के धार्मिक विकास के पुनर्निर्माण को देखा। आज हम जो करना चाहते हैं, आपकी शीट पर "बी", प्राचीन इज़राइल में पूजा के केंद्रीकरण के बारे में वेलहाउज़ेन के दृष्टिकोण का एक सुझाया गया जवाब था। अब मैं यहां शुरुआत में जो करने जा रहा हूं वह आपको काफी हद तक वह तरीका बताएगा जिसमें हलवर्डा ने वेलहाउज़ेन की स्थिति के खिलाफ तर्क दिया है। यदि आप अपनी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 5 को देखते हैं, तो पृष्ठ के नीचे "व्यवस्थाविवरण में पूजा का केंद्रीकरण" है, और आप देखते हैं कि चौथी प्रविष्टि हलवर्डा है । यह एक डच लेख है जिसका अनुवाद "वह स्थान जिसे प्रभु चुनेगा।" उस लेख का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया गया है. मुझे लगता है कि यह काफी अच्छा लेख है, और जो कुछ मैं यहां कहूंगा वह काफी हद तक उस लेख से अपनी थीसिस विकसित करने का तरीका है। हलवर्डा का उल्लेख है कि वेलहाउज़ेन के सिद्धांत के विरोध के इतिहास में, अधिकांश आपत्तियाँ प्रणाली के विभिन्न विवरणों के विरुद्ध निर्देशित हैं। आप यहां वेलहाउज़ेन की प्रणाली देखते हैं, और आपको इस प्रणाली के आलोचकों को इस विवरण या उस विवरण या किसी अन्य विवरण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मिलता है, लेकिन वेलहाउज़ेन की प्रणाली का बहुत सारा विरोध उनके सिस्टम के विभिन्न विवरणों के विरुद्ध निर्देशित किया गया है। लेकिन हलवर्डा का तर्क यह है कि यह महसूस किया जाना चाहिए कि पूजा का केंद्रीकरण पूरी व्यवस्था में मुख्य बिंदु है। दूसरे शब्दों में, यदि आप वेलहाउज़ेन सिस्टम पर जा रहे हैं, तो केंद्रीकरण का मुद्दा इस पूरे सिस्टम में प्रमुख मुद्दा है।

1. हेलवर्डा की वेलहाउज़ेन पर प्रतिक्रिया: ऐतिहासिक पुस्तकों में कई वेदियां होती हैं

हलवर्डा का कहना है कि जब आप पुराने नियम को देखते हैं, तो आप बहुत जल्दी नोटिस करते हैं कि ऐतिहासिक पुस्तकों में जो न्यायाधीशों से लेकर राज्य के समय तक के समय को

शामिल करते हैं, आपको बार-बार वेदियों की बहुलता का उल्लेख मिलता है। ऐसा होने पर, न्यायाधीशों से लेकर राज्य काल तक वेदियों की बहुलता, वह कहते हैं, यह कहना शायद ही संतोषजनक है कि पूजा अवैध थी, या नाजायज थी, इन सभी स्थानों पर जहां तम्बू में पूजा के अलावा पूजा करने का संदर्भ दिया गया है, या बाद में मंदिर में. अब वह कहते हैं, बेशक, पूजा के ऐसे उदाहरण हैं जो नाजायज़ थे, जो मोज़ेक कानूनों के अनुरूप नहीं थे। उदाहरण के लिए, न्यायियों 17 में, आपको मीका नाम के एक व्यक्ति की कहानी याद है जिसके पास ये घरेलू मूर्तियाँ थीं, और दानी आते हैं और इन मूर्तियों को ले जाते हैं और मीका के लेवी के साथ उत्तर की ओर चले जाते हैं। फिर उन्होंने वहां पूजा का एक स्थान और एक वेदी स्थापित की। निश्चय ही वह इबादत नाजायज़ थी। यह मोज़ेक कानून की आवश्यकताओं के विरुद्ध है। जब आप राजाओं की पुस्तकें पढ़ते हैं, तो हमें नबात के पुत्र यारोबाम के बारे में भी शिकायत होती है । यह कहता है, उत्तर के प्रत्येक राजा ने इस्राएल से पाप कराया। अब, वह पाप यह था कि उसने उत्तर में बेथेल और दान में उन सुनहरे बछड़ों और वेदियों का निर्माण किया।

2. वेदियों की बहुलता नहीं बल्कि स्वर्ण बछड़े की पूजा जेरोबाम की समस्या अब, हलवर्डा के अनुसार मुद्दा यह नहीं है कि उत्तर में एक वेदी थी, जो वैध होती, बल्कि स्वर्ण बछड़े की पूजा होती थी, जो निश्चित रूप से थी दूसरी आज्ञा का उल्लंघन: "तुम अपने लिये कोई मूरत या समानता न बनाना।" तो आप पूजा और वेदियों के उदाहरण पा सकते हैं जो नाजायज़ थे। लेकिन तुम्हें बहुत से ऐसे भी मिलेंगे जिनके लिए कोई निंदा नहीं की जा सकती; वे बहुत धर्मात्मा लोग हैं जो इन वेदियों पर बलिदान दे रहे हैं, और यह पूरी तरह से वैध प्रतीत होता है। तो उस अवधि में राज्य के न्यायाधीशों के लिए, ऐसा लगता है कि वेदियों की बहुलता की निंदा नहीं की गई *है*।

3. माउंट कार्मेल पर एलिय्याह और वेदी (1 किलोग्राम 18-19) हलवर्डा ने एक उदाहरण पेश किया है, और मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण है, एलिय्याह के मंत्रालय में है। याद रखें एलिय्याह ने कार्मेल पर्वत पर अहाब का सामना किया था। इस प्रक्रिया में उसने यहोवा की एक वेदी का पुनर्निर्माण किया जो टूट गई थी। तब यहोवा और बाल के बीच तुम्हारा मुकाबला हुआ। यहोवा

ने एलिय्याह की प्रार्थना का उत्तर दिया, और स्वर्ग से आग आई और उस वेदी को बाल के ऊपर और उसके विरुद्ध यहोवा के अस्तित्व और शक्ति के प्रदर्शन के रूप में जलाया, जो ऐसा नहीं कर सका। निःसन्देह वह मन्दिर की वेदी से भिन्न एक वेदी थी। यह उस समय के बाद की बात है जब मंदिर का निर्माण हुआ था। एक अन्य वेदी के रूप में इसकी निंदा करने के बजाय , ऐसा लगता है कि प्रभु ने अहाब के समय में उत्तर में उस वेदी को मंजूरी दी थी। बाद में, हलवर्डा कहते हैं, मुझे लगता है कि यह उस संदर्भ में है जहां एलिय्याह हतोत्साहित है क्योंकि वह ईज़ेबेल से भाग रहा है, 1 राजा 19:10 में, जब वह होरेब पर्वत तक भाग गया था: "और प्रभु का वचन कहता है उससे, 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' उसने उत्तर दिया, 'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये बहुत जोशीला रहा हूँ। इस्राएलियों ने तेरी वाचा को तुच्छ जाना, और तेरी वेदियोंको तोड़ डाला, और तेरे भविष्यद्वक्ताओंको तलवार से मार डाला है। मैं अकेला बचा हूं।" आप देखिए, उसकी शिकायत यह नहीं है कि बहुत सारी वेदियां हैं, बल्कि इस्राएली यहोवा की वेदियों को तोड़ रहे थे और यहोवा की वेदियों का उपयोग नहीं कर रहे थे। वे भविष्यवक्ताओं पर ध्यान नहीं दे रहे थे। “उन्होंने तेरी वाचा को अस्वीकार किया है, तेरी वेदियों को तोड़ डाला है, और तेरे भविष्यद्वक्ताओं को तलवार से मार डाला है।”

तो, कोई यह तर्क दे सकता है कि इसका यरूशलेम में लाए गए बलिदानों की वैधता या यरूशलेम के अलावा कहीं और लाए गए बलिदानों की वैधता से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन वास्तव में यह इस पर पर्याप्त प्रतिक्रिया नहीं लगती। ऐसा प्रतीत होता है कि निश्चित रूप से यरूशलेम के अलावा वेदियों को लेकर कोई समस्या नहीं थी।

मुझे लगता है कि यह मुद्दा वेलहाउज़ेन और उनका अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा बनाया गया मुद्दा है। ऐसा लगता है कि एलिय्याह के लिए वेदियों की बहुलता कोई मुद्दा नहीं थी। यह केवल स्वीकार किया गया था कि बहुत सारी वेदियाँ थीं जो पूरे यरूशलेम में केन्द्रित थीं, लेकिन बहुत सारी अन्य वेदियाँ भी हैं। ऐसा नहीं था कि कई वेदियों से एक वेदी तक प्रगति का कोई इतिहास था। ऐसा लगता है कि यह एक ऐसी अवधारणा है जो एलिजा के लिए पूरी तरह से विदेशी है।

4. ऊँचे स्थानों पर कनानी वेदियाँ निषिद्ध थीं अब, बेशक, ऊँचे स्थानों पर वेदियाँ थीं, लेकिन मैं इस

बिंदु पर बस इतना ही कहूंगा और हम वापस आकर इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे। ऐसा लगता है कि कुछ ऊँचे स्थान नाजायज थे क्योंकि उन्हें कनानियों से ले लिया गया था, जो विशेष रूप से निषिद्ध था। ऐसा लगता है कि कुछ अन्य ऊंचे स्थान भगवान की पूजा के स्थान थे। वास्तव में, यह कुछ मामलों में विशेष रूप से कहा गया है। ऐसा लगता है कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन ऐसा लगता है कि ऊंचे स्थानों पर धीरे-धीरे आपको बाल पूजा और भगवान की पूजा के बीच इस तरह की समन्वयवादी पूजा और भ्रम मिलना शुरू हो जाता है। उस समय , यह गलत हो गया.

तो तुम्हें दक्षिण में वे राजा मिलेंगे जिनके बारे में कहा जाता है, "उन्होंने यहोवा की दृष्टि में अच्छा किया," जैसे योशिय्याह और हिजकिय्याह। योशिय्याह ने उन्हें नष्ट कर दिया। आसा और हिजकिय्याह ने यहोवा की दृष्टि में अच्छा किया, सिवाय इसके कि उन्होंने ऊंचे स्थानों को नहीं तोड़ा। ऐसा लगता है कि यह कुछ हद तक उनके शासनकाल पर एक धब्बा जैसा था। उन्हें इन्हें तोड़ देना चाहिए. लेकिन फिर सवाल यह है कि उन्हें उन्हें क्यों तोड़ना चाहिए था? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि यरूशलेम में एक वेदी थी? यह एक संभावित उत्तर हो सकता है. या ऐसा इसलिए है क्योंकि वहां पर विधर्मी पूजा चल रही थी? मैं बाद में इस ओर झुका हूं। या यह समन्वयवादी पूजा थी? हम उस पर वापस आएंगे।

5. सैमुअल और मल्टीपल अल्टार्स इस प्रश्न के संबंध में सैमुअल की पुस्तकें विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। शमूएल निश्चित रूप से प्रभु का एक भविष्यवक्ता, एक सुधारक था। उन्होंने लोगों को प्रभु की ओर वापस बुलाया और बुतपरस्त पूजा से दूर रखा। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर अनेक वेदियाँ बनवाईं। 1 शमूएल के अध्याय 9 में, आप श्लोक 12 में पढ़ते हैं जब शाऊल अपने खोए हुए गधों की तलाश में होता है और उसका नौकर कहता है कि चलो, परमेश्वर के इस व्यक्ति, शमूएल द्रष्टा से पूछताछ करें। श्लोक 12 कहता है कि जब वे नगर में आए और पूछा कि क्या वहां कोई द्रष्टा है, तो उन्होंने उत्तर दिया, "वह है, वह तुमसे आगे है।" अब जल्दी करो; वह आज ही हमारे नगर में लोगों के लिये ऊँचे स्थान पर बलिदान देने आये हैं।" और जैसे ही आप उस अध्याय को पढ़ते हैं, आप पाते हैं कि सैमुअल जाता है और ऊंचे स्थान पर स्थित इस बलिदान में भाग लेता है।

पद 13: "जैसे ही तुम नगर में प्रवेश करो, वह भोजन करने के लिये ऊंचे स्थान पर चढ़ने से

पहिले तुम्हें मिल जाएगा। जब तक वह न आये तब तक लोग खाना आरम्भ न करेंगे क्योंकि उसे बलिदान पर आशीष देनी है। बाद में जिन्हें निमंत्रित किया गया है वे भोजन करेंगे। अभी ऊपर जाओ और तुम्हें इसी समय उसे ढूंढ़ लेना चाहिए।"

श्लोक 19 कहता है, "'मैं द्रष्टा हूं,' शमूएल ने उत्तर दिया। 'मेरे साथ ऊँचे स्थान पर चलो, क्योंकि आज तुम्हें मेरे साथ भोजन करना है, और भोर को मैं तुम्हें जाने दूँगा और जो कुछ तुम्हारे हृदय में है वह सब तुम्हें बता दूँगा।" श्लोक 25 कहता है, "उनके नीचे आने के बाद शमूएल ऊंचे स्थान से नगर में आया, और घर की छत पर शाऊल से बातें करने लगा," इत्यादि। यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि शमूएल का बलिदान, और यह बलि का भोजन था जिसे शाऊल ने रामा में खाया था ।

1 शमूएल 7, आयत 6 में, शमूएल ने मिस्पा में बलिदान दिया। "जब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, तब उन्होंने जल निकाला, और यहोवा के साम्हने उण्डेल दिया। उस दिन उन्होंने उपवास किया और कबूल किया, 'हमने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है।' शमूएल मिस्पा में इस्राएल का नेता था।" आयत 9 में कहा गया है, "शमूएल ने एक दूध पीता मेम्ना लिया और उसे संपूर्ण होमबलि के रूप में यहोवा को चढ़ाया। उस ने इस्राएल की ओर से यहोवा की दोहाई दी, और यहोवा ने उसे उत्तर दिया। वह एक और जगह है जहां उन्होंने बलिदान दिया।

अध्याय 11 में सैमुएल इसे गिलगाल में करता है। 1 शमूएल 11:15 में, शमूएल कहता है, "आओ गिलगाल चलें और राजत्व की पुष्टि करें। इसलिये सब लोग गिलगाल को गए, और यहोवा के साम्हने शाऊल को राजा ठहराया। उन्होंने मेलबलि का बलिदान दिया।" सैमुअल इन विभिन्न स्थानों पर गया, इसलिए निश्चित रूप से वहाँ कई वेदियाँ थीं जहाँ सैमुअल ने बलिदान दिया था।

बाद में पुस्तक के अध्याय 16 में, जब प्रभु ने शमूएल से कहा कि वह जाकर शाऊल के स्थान पर राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक करे, तो आपने दूसरे पद में पढ़ा (इस पद पर अक्सर इसके द्वारा उठाए गए नैतिक प्रश्न के कारण चर्चा की गई है), लेकिन आप इसमें देखते हैं पहला पद प्रभु शमूएल से कहता है (1 शमूएल 16:1) "'तू कब तक शाऊल के लिये विलाप करता रहेगा, क्योंकि मैं ने उसे इस्राएल का राजा होने से अस्वीकार कर दिया है? अपने सींग में तेल भर ले; अपने काम से काम रखो। मैं तुम्हें बेतलेहेम के यिशै के पास भेज रहा हूं; मैंने उनके पुत्रों में से एक को

राजा बनने के लिए चुना है।' सैमुअल कहते हैं, 'मैं कैसे जा सकता हूं? शाऊल इसके बारे में सुन लेगा और मुझे मार डालेगा। " प्रभु की प्रतिक्रिया क्या है? “अपने साथ एक बछिया ले जाओ और कहो, 'मुझे प्रभु के लिए बलि चढ़ाने आना है।'” इसलिए बेथलहम में बलि चढ़ाया जाना कोई असामान्य बात नहीं रही होगी। उस प्रकाश में, शाऊल को एहसास नहीं हुआ होगा कि क्या हो रहा था। मैं इसके द्वारा उठाए गए नैतिक मुद्दे में नहीं पड़ूँगा।

जान बचाने के लिए शाऊल से झूठ बोलने की चर्चा (1 शमूएल 16) यह एक दिलचस्प अंश है, 1 शमूएल 16:2। इससे यह सवाल उठता है, "क्या किसी को धोखा देना सही है?" मुझे लगता है कि ऐसे मामले हैं जहां किसी को धोखा न देने की कोई बाध्यता नहीं है और जहां कोई धोखा देने के लिए दोषी नहीं है, खासकर लगभग युद्ध के संदर्भ में जैसा कि यहां है या जहां जीवन दांव पर है। मुझे ऐसा लगता है कि आपका दायित्व दूसरे व्यक्ति के प्रति आपकी अपेक्षा "सच बोलना" अधिक है। फिर आप इस सवाल में पड़ जाते हैं कि सच क्या है और झूठ क्या है। ये पारिभाषिक और अर्थ संबंधी प्रश्न हैं, और यह बहुत जटिल हो जाते हैं। मुझे नहीं लगता कि हम उस मुद्दे का समाधान कर सकते हैं। मैंने पुराने नियम के इतिहास में इसकी चर्चा की है। मुझे नहीं लगता कि आप उस मुद्दे को नौवीं आज्ञा के अलावा संबोधित कर सकते हैं, "तू अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं देगा।" यह सत्य के प्रति महज़ एक अमूर्त प्रतिबद्धता नहीं है। यह आप ही हैं और आपको अपने शब्दों से अपने पड़ोसी की रक्षा करनी है; यह आपका सकारात्मक दायित्व है। मुझे ऐसा लगता है कि जब आप इसके निहितार्थों पर काम करते हैं, तो इस प्रकार का पाठ उस दृष्टिकोण के अनुरूप होता है। पुराने नियम में अन्य पाठ भी हैं जिन्हें इसी तरह से लिया जाना चाहिए। अब, आप विशेष रूप से उस तरह की चीज़ में पड़ जाते हैं, जैसा कि मैंने कहा है, पुराने नियम के इतिहास में। यहां कुछ कोरियाई साथी कोरिया में युद्ध जैसी स्थिति के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। और मेरी पत्नी एक अधिकृत देश नीदरलैंड में पली-बढ़ी। उसके माता-पिता ने यहूदियों को आश्रय दिया और उनकी रक्षा की। आपको यह प्रश्न मिलता है: यदि एसएस आपके दरवाजे पर दस्तक दे तो आप क्या करेंगे? क्या तुम कहते हो, “वे यहाँ हैं,” या तुम उन्हें धोखा देते हो? मुझे लगता है कि उन्हें धोखा देना आपकी ईसाई ज़िम्मेदारी है। यह अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही देना नहीं है। उस पर लोगों

के अलग-अलग विचार हो सकते हैं. यह एक कठिन प्रश्न है.

वाल्टर कैसर की नैतिकता पर लिखी किताब में उन्होंने यह अंतर बताने की कोशिश की है और कहा है कि धोखा देना कभी भी सही नहीं है लेकिन कुछ मामलों में आप छुपा सकते हैं। और एक चित्रण का उपयोग करता है जहां आप छुपा सकते हैं। हम शायद कभी नहीं जान पाएंगे कि क्या सैमुअल से यह कहते हुए सवाल किया गया था, "आप क्या कर रहे हैं?" सैमुअल कहते हैं, "मैं ऐसा करने जा रहा हूं," और यह सच है। फिर भी यह उसके असली इरादे और वहां जाने के उसके असली कारण को छिपा रहा है। तो जहाँ तक मेरा सवाल है, वह उसी समय शाऊल को धोखा दे रहा है। मुझे यकीन नहीं है कि भेद से इतनी मदद मिलती है। (छात्र कुछ कहता है) मुझे लगता है कि यह एक तकनीकी बात है, क्योंकि अंतिम परिणाम वही है। उसे एक बात पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया गया है जबकि वास्तव में वह किसी और कारण से जा रहा है। यद्यपि तकनीकी रूप से आप यह तर्क दे सकते हैं कि, क्या वह अंतर वास्तव में बहुत मूल्यवान है? शायद यह कुछ सार्थक हो. (छात्र कुछ कहता है) आप देखिए, हॉज झूठ के बारे में कहते हैं, भले ही आप कुछ ऐसा कहते हैं जो वास्तविकता के अनुरूप नहीं है, हॉज कहते हैं कि अगर सच बोलने की कोई बाध्यता नहीं है तो वह झूठ नहीं है। इसलिए यदि आप सच बोलने के लिए बाध्य नहीं हैं, तो यह झूठ नहीं है। तो फिर यह इस पर भी निर्भर करता है कि आप अपनी शर्तों को कैसे परिभाषित करते हैं। यह हमें इस प्रश्न से बहुत दूर ले जाएगा। मुद्दा यह है कि, बेथलहम में एक वेदी थी। इस समय, तम्बू पर नहीं, बल्कि बेथलहम में जाकर बलिदान देना असामान्य नहीं लगता ।

6. सैमुअल में एकाधिक वेदियाँ जारी देखें यह अभी भी इस क्षेत्र के साथ फिट होगा क्योंकि वेलहाउज़ेन कहेंगे कि 621 ईसा पूर्व से पहले इस बिंदु पर आपके पास वेदियों की बहुलता थी। इसलिए उन्होंने इसकी अपील भी की. उस अवसर पर जब दाऊद शाऊल की मेज पर अपने स्थान पर नहीं था, 1 शमूएल के अध्याय 20 में, शाऊल ने शुरू में यह मानकर उसे माफ कर दिया कि वह अशुद्ध था। यह अमावस्या के पर्व के अवसर पर था। आपने 1 शमूएल 20:26 में पढ़ा, शाऊल ने उस दिन कुछ नहीं कहा क्योंकि उसने सोचा कि दाऊद अपने स्थान पर नहीं था और दाऊद के साथ कुछ ऐसा हुआ होगा जिससे वह औपचारिक रूप से अशुद्ध हो गया। “परन्तु अगले ही दिन,

उसी महीने में दाऊद का स्थान फिर खाली हो गया। तब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से कहा, यिशै का पुत्र कल या आज भोजन पर क्यों नहीं आया? जोनाथन ने उत्तर दिया, 'दाऊद ने मुझसे बेथलेहम जाने की अनुज्ञा बहुत आग्रहपूर्वक मांगी। उसने कहा, "मुझे जाने दो क्योंकि मेरा परिवार कस्बे में एक यज्ञ मना रहा है और मेरे भाई ने मुझे वहाँ रहने का आदेश दिया है। यदि मुझ पर आपकी कृपा दृष्टि है तो मुझे अपने भाइयों से मिलने जाने दीजिए।" इसीलिए वह राजा की मेज पर नहीं आया है" अब, निस्संदेह, डेविड और जोनाथन ने पहले ही यह व्यवस्था कर दी थी कि यही प्रतिक्रिया होगी; लेकिन फिर, मुद्दा यह है कि हम जिस पर चर्चा कर रहे हैं वह यह है कि शाऊल ने इसे बिल्कुल सामान्य समझा होगा कि डेविड एक बलिदान देने के लिए बेथलहम गया था। उन्होंने वाजिब बहाना दिया. किसी को भी उस पर कानून से विचलन नहीं दिखता।

अब, ये कुछ संदर्भ हैं जो वेदियों की बहुलता दर्शाते हैं। तब कुछ लोग प्रतिक्रिया देते हैं और कहते हैं कि व्यवस्थाविवरण 12 कहता है, "जब वह तुम्हें विश्राम देगा" (यह पद 1 और पद 10 में है)। श्लोक 1 कहता है, "ये वे नियम और कानून हैं जिनका पालन तुम्हें उस देश में करने में सावधान रहना चाहिए जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुम्हें दिया है - जब तक तुम उस देश में रहते हो।" आयत 10 कहती है, "तू यरदन पार करके उस देश में बस जाएगा जो तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे निज भाग करके दिया है, और वह तुझे तेरे चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम देगा, और तू निडर रहेगा।"

7. अस्थिर समय: Deut. 12 केंद्रीकरण केवल तभी जब ईश्वर विश्राम दे [डेविड/सुलैमान के बाद]

कुछ लोग कहते हैं कि ये अस्थिर समय थे: शमूएल और शाऊल का समय। व्यवस्थाविवरण 12:10 कहता है कि इन नियमों का पालन तब किया जाना चाहिए "जब प्रभु परमेश्वर तुम्हें विश्राम दे।" फिर 2 शमूएल 7:1 और 11 की ओर इशारा किया गया है। 2 शमूएल 7 वह अध्याय है जहां प्रभु ने दाऊद को वचन दिया कि वह उसके लिए एक घर बनाएगा। आप 2 शमूएल 7:1 में पढ़ते हैं: "जब राजा अपने महल में बस गया और यहोवा ने उसे उसके सभी शत्रुओं से विश्राम दिया..." पद 10 कहता है, "मैं अपनी प्रजा इस्राएल के लिए एक स्थान प्रदान करूंगा और उन्हें बसाऊंगा।"

ताकि उनका अपना घर हो सके और उन्हें कोई परेशानी न हो। दुष्ट लोग उन पर अब और अन्धेर न करेंगे जैसा उन्होंने आरम्भ में किया, और जब से मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल पर प्रधान नियुक्त किया है तब से करते आए हैं। मैं तुझे तेरे सब शत्रुओं पर भी विश्राम दूंगा।" बहुत से लोग कहते हैं कि जहां व्यवस्थाविवरण 12 लागू होगा, वहां विश्राम की स्थितियां या स्थिति विकसित नहीं हुई, जब तक कि दाऊद के समय तक 2 शमूएल 7 में यह नहीं कहा गया, "प्रभु ने उसे उसके सभी शत्रुओं से विश्राम दिया था।" मुझे नहीं लगता कि इससे वेदी की समस्या का समाधान हो जाता है कि उस बिंदु पर ऐसी स्थितियाँ विकसित हो जाती हैं जिनके कारण व्यवस्थाविवरण 12 की प्रयोज्यता हो सकती है। ध्यान दें कि 2 शमूएल 7 के बाद भी अबशालोम ने अपनी क्रांति का आयोजन किया जो हेब्रोन में केंद्रित थी, 2 शमूएल 15:7 में आपने पढ़ा, "4 साल के अंत में अबशालोम ने राजा से कहा, 'मुझे हेब्रोन जाकर एक काम पूरा करने दो मैंने प्रभु से जो प्रतिज्ञा की है। जब तेरा दास अराम के गेशेर में रहता या , तब मैं ने यह मन्नत मानी। यदि यहोवा मुझे यरूशलेम ले जाए, तो मैं हेब्रोन में यहोवा की आराधना करूंगा।' इसलिए राजा ने उससे कहा, 'शांति से जाओ।' इसलिये वह हेब्रोन को गया।" और, निःसंदेह, यह एक धोखा था, जिसमें अबशालोम ने खुद को दर्शाया कि वह अपनी मन्नत पूरी करने और यहोवा की आराधना करने और बलिदान चढ़ाने सहित अपनी मन्नत पूरी करने के लिए हेब्रोन जा रहा है। तो हेब्रोन में एक वेदी अवश्य रही होगी। अबशालोम ऐसा करता है, परन्तु वह दाऊद की सहमति से ऐसा करता है। ऐसा लगता है कि केंद्रीय वेदी के अलावा अभी भी वेदियाँ मौजूद थीं, जिनमें कोई प्रश्न शामिल नहीं था।

इसके अलावा, यदि व्यवस्थाविवरण 12:10 में जिस विश्राम के बारे में बात की गई है वह बाहरी शत्रुओं से विश्राम को संदर्भित करता है, तो व्यवस्थाविवरण 12 केवल बहुत ही संक्षिप्त अवधि के लिए लागू होगा, ज्यादातर सुलैमान के समय के दौरान और उसके बाद। "आराम" शब्द को बाहरी शत्रुओं के बजाय आंतरिक शत्रुओं के संदर्भ में समझना अधिक बेहतर लगता है। देखें 2 सैमुएल 7 में डेविड का संदर्भ बाहरी शत्रुओं के लिए है , लेकिन व्यवस्थाविवरण 12 के संदर्भ को आंतरिक शत्रुओं के रूप में समझना बेहतर लगता है, और बाकी वास्तव में विजय के तुरंत बाद हासिल किया गया था। याद रखें रूबिनियों और गादियों और मनश्शे के आधे गोत्र विजय में सहायता के लिए आए थे, फिर वे जॉर्डन के पूर्व में अपने क्षेत्र में वापस चले गए। आप यहोशू 22:4 में

पढ़ते हैं: "अब जब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है, तो उस देश में अपने घरों को लौट जाओ जो यहोवा के दास मूसा ने तुम्हें यरदन के पार दिया था" अब आराम करो विजय के तुरंत बाद हासिल किया गया। वे आन्तरिक शत्रु पराजित हो गये। कनानियों की हार हुई। और यदि ऐसा है, तो इसका मतलब है कि व्यवस्थाविवरण 12 का कानून शमूएल के समय और शाऊल के समय में प्रभावी और लागू होगा। डेविड के समय की तुलना में हम इसे वहां बेहतर ढंग से खोज सकते हैं। इनमें से कुछ आंतरिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त होने के बाद न्यायाधीशों की पुस्तक के माध्यम से आपके पास समय-समय पर वह संदर्भ भी होता है। शायद एक अपवाद को छोड़कर, वे अधिकतर न्यायाधीशों की पुस्तक में आंतरिक थे।

8. यहोशू 21:43 में विश्राम करें यदि आप यहोशू 21:43 देखें तो आप वहां पढ़ते हैं: “यहोवा ने इस्राएल को वह सारी भूमि दे दी जिसे देने की उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी। उन्होंने इस पर कब्ज़ा कर लिया और वहीं बस गये। यहोवा ने उनके पूर्वजों से शपथ के अनुसार उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया। उनके किसी भी शत्रु ने उनका सामना नहीं किया। यहोवा ने उनके सब शत्रुओं को उनके वश में कर दिया। इस्राएल के प्रति यहोवा के सभी अच्छे वादों में से एक भी विफल नहीं हुआ; हर कोई पूरा हुआ।" ऐसा लगता है कि यह बिल्कुल निरपेक्ष शर्तें हैं, फिर भी आप न्यायाधीशों की पुस्तक के पहले अध्याय की ओर मुड़ते हैं और आपको कई जनजातियाँ मिलती हैं जो कहती हैं कि उन्होंने अभी तक अपने क्षेत्र के इस या उस हिस्से पर कब्ज़ा नहीं किया है। अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है. मुझे लगता है कि जोशुआ में जो उल्लेख किया गया है वह यह है कि प्रतिरोध वास्तव में टूट गया था और लोगों को उनके निर्दिष्ट क्षेत्रों में जाने और बसने में सक्षम बनाया गया था। भूमि पर विजय एक ऐसी चीज़ थी जिसे वास्तव में पूरा किया गया था, फिर भी अभी भी काम किया जाना बाकी था। जोशुआ 22 में विश्राम का यह संदर्भ है।

9. निर्गमन 20:24-26 बिना कटे पत्थरों की वेदियाँ

दूसरी बात यह है: निर्गमन 20:24-26 के बारे में क्या? हमने अभी तक उस पर गौर नहीं किया है, मुझे उसे पढ़ने दीजिए। इसे अक्सर वेदी का नियम कहा जाता है। इस्राएलियों से कहा गया है: "मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाओ, और उस पर अपने होमबलि, मेलबलि, अपनी भेड़-बकरी, और अपने मवेशियों को बलि करो। जहाँ भी मैं अपने नाम का सम्मान करूँगा, मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ, तो उसे गढ़े हुए पत्थरों से न बनाना, क्योंकि यदि तुम उस पर कोई औज़ार चलाओगे, तो तुम उसे अशुद्ध करोगे। और मेरी वेदी के पास सीढ़ियों से न चढ़ना, ऐसा न हो कि तेरा तन उस पर प्रगट हो जाए।"

अब निर्गमन 20:24-26 में वेदियों के निर्माण के बारे में नियमों का क्या मतलब है? यह बिना कटे पत्थरों और मिट्टी की वेदी की बात क्यों करता है? क्या इसका अभिप्राय केवल जंगल काल के लिए था? इसका कोई संकेत नहीं है. ऐसा प्रतीत होता है कि इसका अभिप्राय उस समय से है जब इस्राएल कनान देश में आयेगा। आपने देखा कि नियम इस बात से संबंधित हैं कि वेदियाँ कैसे बनाई जानी चाहिए - इसे सजे हुए पत्थरों से न बनाएं: सीढ़ियाँ न बनाएं; उसी तरह की चीज़। यह पृथ्वी की वेदी होगी। यह उन स्थानों को भी संबोधित करता है जहां उन्हें स्थित होना था। "जहाँ भी मैं सम्मानित होने के लिए अपना नाम पुकारता हूँ" (एनआईवी अनुवाद)। यहीं पर वेदी बनाई जा सकती है। किंग जेम्स कहते हैं, "उन सभी स्थानों पर जहां मैं अपना नाम दर्ज करता हूं।" ऐसा लगता है जैसे किसी स्थान की किसी प्रकार की दैवीय स्वीकृति होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, ईश्वर एक स्थान चुनता है। फिर वेदी किस प्रकार की होगी इसके बारे में ये नियम हैं, लेकिन केवल एक वेदी के बारे में कोई संकेत नहीं है। ऐसा लगता है कि आम तौर पर सैमुअल के समय की प्रथा इस विधान से स्पष्ट रूप से मेल खाती है। ऐसी कई वेदियाँ हैं जहाँ सैमुअल ने बलिदान दिया था।

तो सवाल यह है कि आप इनमें सामंजस्य कैसे बिठाते हैं? बेशक, वेलहाउज़ेन इस मुद्दे को संबोधित करता है। आप निर्गमन 20:24-26 को व्यवस्थाविवरण 12 के साथ कैसे सामंजस्य बिठाते हैं? वेलहाउज़ेन ने जो किया वह यह कहना था कि दोनों कानूनों के बीच विकास की एक लंबी अवधि है। निर्गमन 20:24-26 एक प्रारंभिक अवधि का प्रतिनिधित्व करता है जहां आपके पास वेदियों की बहुलता है, और आपके पास बाद में एक लंबी अवधि थी - योशिय्याह का समय - जब

आपके पास केंद्रीकरण होता है, और इस प्रकार एक स्थिति से दूसरी स्थिति में चले जाते हैं।

10. Deut पढ़ना. 12 सही ढंग से

प्रश्न यह है कि क्या हमने वास्तव में व्यवस्थाविवरण 12 को सही ढंग से पढ़ा है? यदि हम सोचते हैं कि व्यवस्थाविवरण 12 में एक केंद्रीय वेदी, या केवल एक वेदी की आवश्यकता है, तो क्या पूजा का केवल एक ही वैध स्थान है? क्या व्यवस्थाविवरण 12 वास्तव में उस प्रकार के केंद्रीकरण की मांग करता है? यदि ऐसा नहीं होता है, तो निस्संदेह, निर्गमन और व्यवस्थाविवरण के बीच कोई विरोध नहीं है। यदि इसके लिए एक वैध वेदी की आवश्यकता है, तो मुझे लगता है कि निर्गमन और व्यवस्थाविवरण 12 के बीच एक संघर्ष है।

आइए मैं आपको बताता हूं कि हलवर्डा उस समस्या के जवाब में व्यवस्थाविवरण 12 के साथ क्या करता है: निर्गमन और व्यवस्थाविवरण 12 से कैसे संबंधित हों। व्यवस्थाविवरण 12:14 एक प्रमुख श्लोक है जिसे अभी लाया गया था। “परन्तु जो स्थान यहोवा तुम्हारे गोत्रों में से किसी एक में चुन लेगा,” और वह आगे कहता है, “तू अपना होमबलि वहीं चढ़ाना।” मुझे लगता है कि उस कथन के लिए हमें श्लोक 13 पर वापस जाने की आवश्यकता है, जो कहता है, "ध्यान रखो कि तुम अपना होमबलि हर उस स्थान पर, जिसे तुम देखो, न चढ़ाओ।" इसके विपरीत, जो स्थान यहोवा तुम्हारे गोत्रों में से किसी एक में चुन लेगा, वहीं अपने बलिदान चढ़ाना। पहली धारणा यह हो सकती है कि बलिदान लाने के लिए केवल एक ही जगह होगी, और एक ही जगह होगी। हलवर्डा का कहना है कि आप पहली छाप से नहीं रुक सकते। अभिव्यक्ति "आपकी जनजातियों में से एक" आवश्यक रूप से केवल एक को इंगित नहीं करती है। इसमें अंग्रेजी "कोई भी" का विचार हो सकता है। उस स्थान में जिसे यहोवा तुम्हारे *किसी गोत्र में चुन लेगा।* अब जिस तरह से वह इस पर काम करता है, वह कई दृष्टांतों का उपयोग करता है। वह व्यवस्थाविवरण 18:6 की ओर अपील करता है जहां आपके पास एक श्लोक है, "यदि तेरे फाटकों में से एक [हिब्रू: *एहद] से कोई लेवी आए।"* विचार यह है कि यदि कोई लेवी "आपके किसी कस्बे" से आता है, और एनएएसवी इसका अनुवाद इसी तरह करता है। आप इसका अनुवाद "अपने किसी कस्बे से" कर सकते हैं, लेकिन सबसे पहले विचार यह नहीं है कि यदि कोई लेवी केवल एक ही शहर से आता है; विचार यह है कि

वह आपके किसी कस्बे से आता है।

व्यवस्थाविवरण 23:17 दास के विषय में तुम कहते हो, कि वह तेरे फाटकों में से जिस किसी स्थान को चुन ले वह तेरे संग वास करेगा। वहाँ फिर से ' *एहद* ' को "कोई भी" के रूप में समझा जाना चाहिए। "आपका कोई भी द्वार।" तो 12:14 में, आपके पास "एक" शब्द है जिसका अनुवाद "कोई भी" किया जा सकता है। आपके पास जो दूसरी चीज़ है वह है "स्थान पर", जो निश्चित लेख के साथ एकवचन है। यह तर्क दिया जाएगा, क्या यह एकवचन में नहीं है और क्या इसका मतलब केवल एक ही स्थान नहीं है? यदि एक से अधिक का अर्थ हो तो क्या आप बहुवचन की अपेक्षा नहीं करेंगे? और फिर, हलवर्डा का उत्तर है , जरूरी नहीं। वह संख्या 16, श्लोक 7 से अपील करता है। "और जिस मनुष्य को प्रभु चुन लेगा वह पवित्र होगा।" "आदमी" एकवचन, निश्चित लेख, "जिसे प्रभु चुनता है, वह वही होगा जो पवित्र है।" संख्या 16 के संदर्भ में, प्रसंग कोरह, दातान और अबीराम द्वारा मूसा के नेतृत्व के विरुद्ध विद्रोह का है । पद 7 में आप पढ़ते हैं, “जिस मनुष्य को यहोवा चुन ले वह पवित्र ठहरे। "आदमी" एकवचन है, लेकिन सवाल यह है कि क्या पुजारी या नेता का पद मूसा और हारून तक ही सीमित रखा जाना है, या इसे 250 अन्य लोगों तक बढ़ाया जाना है? आपके पास दो बहुवचनों के बीच एक विकल्प है। क्या नेतृत्व मूसा और हारून के पास रहेगा या इन 250 अन्य लोगों के पास? उत्तर है, "जिस मनुष्य को प्रभु चुनेंगे वह पवित्र होगा।" मतलब साफ़ है. ये पुरुष हैं, या तो मूसा या हारून, या मूसा और हारून। किसी भी मामले में ये वे पुरुष हैं; यह 250 या दो है। जो लेख आप देख रहे हैं उसका उपयोग वितरणात्मक अर्थ में किया जा सकता है, प्रतिबंधात्मक अर्थ में नहीं।

यहेजकेल 18:4 को देखें। यहेजकेल 18:4 है, "जो प्राणी पाप करे वह मर जाएगा।" "आत्मा" एकवचन है. इसका मतलब यह नहीं है कि पाप करने वाली केवल एक ही आत्मा मरेगी। यह वितरणात्मक है. जो प्राणी पाप करेगा वह मर जाएगा। वास्तव में, यदि आप वापस जाते हैं, तो आप देखेंगे कि हमने पहले ही व्यवस्थाविवरण 18:6 को देख लिया है: "अब यदि लेवीय - यह लेवी होना चाहिए - यदि लेवी आपके किसी शहर से आता है।" इसका मतलब केवल एक लेवी नहीं है; अर्थात् *कोई* लेवी। व्यवस्थाविवरण 23:17 में, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, "दास आपके साथ किसी भी स्थान पर जाएगा।" वह भी विलक्षण है. यह लेख का वितरणात्मक अर्थ है; यह प्रतिबंधात्मक नहीं है.

आप यह नहीं कह सकते कि यह केवल एक विशिष्ट व्यक्ति को संदर्भित करता है, अन्य सभी को छोड़कर, जो यहेजकेल 18:4 में मरने वाला है। यह शब्द उन सभी पर लागू होता है जिन पर योग्यता लागू होती है।

तो आइए यहां व्यवस्थाविवरण 12:14 पर वापस जाएं: "परन्तु उस स्थान में जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे गोत्रों में से किसी एक में चुन लेगा।" "स्थान" का अर्थ आवश्यक रूप से केवल एक ही स्थान नहीं है, बल्कि कोई भी स्थान है, जिसे प्रभु आपके किसी भी जनजाति में चुनेंगे, यह एक संभावित वैध पाठ है। हलवर्डा उस पाठ को इसी तरह पढ़ता है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 में ऐसे कई वाक्यांश हैं, मैं वापस जाना चाहता हूं और उनमें से कुछ को देखना चाहता हूं, लेकिन मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम 10 मिनट का ब्रेक लें और हम वापस आएंगे और इसके साथ आगे बढ़ेंगे।

जेफ लेन द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया